



# INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 5; 2025; Page No. 29-33



Special Issue of International Seminar (23rd - 24th August, 2025)  
On the Topic  
Indian Knowledge System (IKS): Challenges & its Application in Higher Education for  
Sustainable Development  
By  
Faculty of Education, IASE (DU), Sardarshahar, Churu, Rajasthan - 331403

## शाला-त्याग की समस्या के संदर्भ में विद्यालयी छात्रों हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयक दृष्टिकोण का एक अध्ययन

जगमोहन सिंह

प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र, डायट, एटा, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.17198751>

Corresponding Author: जगमोहन सिंह

### सारांश:

इस शोध-पत्र का उद्देश्य विद्यालयी छात्रों में शाला-त्याग की समस्या के समाधान हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयक दृष्टिकोण की भूमिका का विश्लेषण करना है। भारत में शाला-त्याग के कारण विविध हैं-आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, भाषा-संबंधी, मनोवैज्ञानिक और पाठ्यचर्या-संबंधी। भारतीय ज्ञान परंपरा, जिसमें लोक-कला, योग, आयुर्वेद, वास्तु-शास्त्र, गणित, खगोल-ज्ञान और दार्शनिक दृष्टिकोण सम्मिलित हैं, शिक्षण को सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और रोचक बना सकती है। बहुविषयक दृष्टिकोण शिक्षा को केवल पुस्तक-ज्ञान तक सीमित न रखकर जीवन-कौशल, मूल्य-आधारित शिक्षा और समस्या-समाधान क्षमता से जोड़ता है। साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि जब शिक्षा विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और अनुभव से जुड़ती है तो उनकी विद्यालय में निरंतरता और सहभागिता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त, IKS आधारित गतिविधियाँ-जैसे योगाभ्यास, पारंपरिक गणितीय खेल, कृषि-आधारित प्रायोगिक कार्य, संगीत और लोक-कला-सीखने को आनंददायक बनाती हैं और शाला-त्याग की प्रवृत्ति को कम करती हैं। बहुविषयक दृष्टिकोण, जैसे विज्ञान और कला का संयोजन, गणित और संगीत का संबंध, तथा पर्यावरण शिक्षा और सामाजिक अध्ययन का एकीकरण, छात्रों को विविध सीखने के अवसर प्रदान करता है। यह शोध दर्शाता है कि यदि विद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयक दृष्टिकोण को योजनाबद्ध ढंग से एकीकृत किया जाए, तो शाला-त्याग दर में कमी, छात्र की अभिरुचि में वृद्धि और सतत शैक्षिक विकास संभव है।

मूलशब्द: शाला-त्याग, भारतीय ज्ञान परंपरा, बहुविषयक दृष्टिकोण, विद्यालयी छात्र, सतत शिक्षा।

### 1. प्रस्तावना

भारत में विद्यालयी शिक्षा का सार्वभौमिकरण अभी भी अनेक संरचनात्मक और सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। यद्यपि RTE Act (2009) और समग्र शिक्षा अभियान जैसी नीतियों ने शिक्षा को सर्वसुलभ एवं समान अवसरों पर आधारित बनाने के उल्लेखनीय प्रयास किए हैं, तथापि शाला-त्याग दर विशेषकर ग्रामीण, आदिवासी तथा वंचित वर्गों में गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है। UNESCO (2021) [18] की रिपोर्ट के अनुसार, 14-16 वर्ष आयु वर्ग के लगभग 16% बच्चे आज भी विद्यालय से बाहर हैं। शाला-त्याग के पीछे अनेक कारण सक्रिय हैं-आर्थिक अभाव और परिवार के सहयोग हेतु श्रम में बच्चों की

संलग्नता, भाषा एवं सांस्कृतिक अवरोध, पाठ्यक्रम की कठिनाई, विद्यालयी शिक्षा की उबाऊ अथवा अप्रासंगिक प्रकृति, और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ। यह स्थिति इस गहरे प्रश्न को जन्म देती है कि क्या हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली वास्तव में बच्चों के जीवन-जगत, उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और अनुभव से जुड़ी हुई है? इस संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा एक वैकल्पिक दृष्टि प्रदान करती है, जहाँ शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न होकर जीवन-मूल्य, संस्कृति, नैतिकता और व्यवहारिकता से गहराई से संबद्ध होती है। यह परंपरा शिक्षा को विद्यार्थी की वास्तविक परिस्थितियों और जीवन कौशल से जोड़कर उसे अधिक सार्थक बनाती है। इसी प्रकार, बहुविषयक दृष्टिकोण शिक्षा को लचीला, सृजनात्मक और

व्यवहारिक बनाता है, जिससे विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों में अनुभव, अभिव्यक्ति और अनुप्रयोग के अवसर प्राप्त होते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल शिक्षा को रोचक और प्रासंगिक बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों को विद्यालय से जोड़े रखने की संभावना को भी बढ़ाता है। अतः यह शोध-पत्र इस महत्वपूर्ण प्रश्न की पड़ताल करता है कि किस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयक दृष्टिकोण को विद्यालयी शिक्षा में समाहित कर शाला-त्याग की समस्या को प्रभावी ढंग से कम किया जा सकता है और शिक्षा को वास्तव में सर्वसुलभ एवं जीवन-सापेक्ष बनाया जा सकता है।

## 2. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

शाला-त्याग की समस्या को गहराई से समझने के लिए तीन बुनियादी सैद्धांतिक दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जो निम्नलिखित वर्णित हैं-

पहला दृष्टिकोण छात्र-रुचि और संलग्नता का सिद्धांत है, जिसके अनुसार Schiefele (1991) [15] तथा Hidi एवं Renninger (2006) [8] ने यह सिद्ध किया कि यदि अध्ययन सामग्री छात्रों के जीवन, संस्कृति और उनके व्यावहारिक अनुभवों से जुड़ी होती है, तो वे अधिक प्रेरित और संलग्न रहते हैं, जिससे शाला-त्याग की संभावना कम हो जाती है। इसका निहितार्थ है कि शिक्षण प्रक्रिया तभी सफल होगी जब वह केवल सैद्धांतिक न रहकर जीवनोपयोगी और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हो।

दूसरा दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का है, जो शिक्षा और जीवन को अद्वैत रूप में देखती है। इसमें योग, आयुर्वेद, शुल्बसूत्र, छंदशास्त्र, वास्तु, लोक-कला और कृषि परंपराओं जैसे विविध आयाम शामिल हैं, जो न केवल सांस्कृतिक धरोहर हैं बल्कि विद्यार्थियों के जीवन में प्रायोगिक गहराई और आत्मीयता जोड़ते हैं (Sarma, 2014; Bag, 1979) [14, 11]। इस दृष्टिकोण से शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन से सीधे जुड़कर उन्हें आत्म-निर्भर और व्यावहारिक ज्ञान से समृद्ध बनाती है।

तीसरा दृष्टिकोण बहुविषयक शिक्षा का है, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 ने विशेष बल दिया है। इस दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल विषय-विशेषज्ञ तैयार करना नहीं है, बल्कि ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझते हुए "जीवन-शिक्षित" बनें। बहुविषयकता छात्रों को विज्ञान, कला, संस्कृति और समाज के विविध पक्षों से जोड़ती है, जिससे उनकी आलोचनात्मक चिंतन क्षमता और समस्या-समाधान कौशल विकसित होते हैं। इस प्रकार, शाला-त्याग की समस्या का समाधान केवल औपचारिक नीतिगत हस्तक्षेपों में नहीं, बल्कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था में निहित है जो छात्रों की रुचि और जीवन से जुड़ी हो, भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को स्वीकार करे और बहुविषयक दृष्टिकोण को व्यवहार में लाए।

## 3. संबंधित साहित्य की समीक्षा

भारत में शाला-त्याग की समस्या बहुआयामी है, जिसके कारण और प्रवृत्तियाँ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक आयामों से जुड़ी हुई हैं। तिलक (2009) [17] और गोविंदा (2011) [7] के अनुसार आर्थिक दबाव, बाल-श्रम, भाषा की बाधाएँ तथा शिक्षा की अप्रासंगिकता इसके प्रमुख कारण हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों का शाला-त्याग अधिक देखा गया है, जो सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक दबाव से भी प्रभावित होता है। इस समस्या के समाधान हेतु शिक्षा को सांस्कृतिक रूप से प्रत्युत्तरदायी बनाने की आवश्यकता है। Gay (2000) [6] और Nasir et al. (2006) [13] ने अपने शोध में यह सिद्ध किया कि जब शिक्षा बच्चों की संस्कृति, भाषा और जीवनानुभवों से जुड़ती है, तो उनकी विद्यालय में टिके रहने की प्रवृत्ति बढ़ती है। इसी संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System) विशेष महत्व रखती है। Joseph (2010) [9] और Sarma (2014) [14] ने भारतीय गणितीय ग्रंथों और छंदशास्त्र की तार्किक संरचनाओं को आधुनिक शिक्षा से जोड़कर यह दर्शाया कि ये विद्यार्थियों

की तार्किक क्षमता, अभिरुचि और सांस्कृतिक जुड़ाव को सुदृढ़ कर सकते हैं। साथ ही, बहुविषयक शिक्षा का समावेश भी विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक सार्थक बनाता है। Beane (1997) [3] और Drake (2012) [5] ने प्रमाणित किया कि बहुविषयक शिक्षा छात्रों में सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और जीवन-कौशल का विकास करती है, जिससे शिक्षा के प्रति उनकी निरंतरता बनी रहती है। वर्तमान डिजिटल युग में शाला-त्याग की चुनौती से निपटने के लिए तकनीकी हस्तक्षेप भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है। Mehta (2021) [11] और Sharma एवं Kaur (2022) [16] के अनुसार DIKSHA जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म ने न केवल शिक्षा की सुलभता को बढ़ाया है, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित शिक्षण को भी छात्रों तक पहुँचाकर उनकी रुचि बनाए रखने में सहायता की है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शाला-त्याग की समस्या के समाधान हेतु आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और तकनीकी दृष्टिकोणों का समन्वय आवश्यक है।

## 4. IKS और बहुविषयक दृष्टिकोण द्वारा शाला-त्याग रोकने का ढाँचा

### 4.1 शिक्षण-सामग्री

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में शिक्षण-सामग्री को इस प्रकार निर्मित किया जा सकता है कि विद्यार्थी न केवल विषयवस्तु को समझें, बल्कि जीवन से उसके प्रत्यक्ष संबंध को भी अनुभव करें। लोक-कला आधारित गणित, जैसे रांगोली और कोलम डिजाइन, ज्यामिति की अवधारणाओं को सहज और रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत करती है। इसी प्रकार, कृषि-आधारित विज्ञान विद्यार्थियों को फसल-चक्र, जल-प्रबंधन तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे व्यावहारिक पहलुओं से जोड़कर विज्ञान और सामाजिक उत्तरदायित्व दोनों की समझ विकसित करता है। योग और मनोविज्ञान के अंतर्गत योगाभ्यास, ध्यान और प्राणायाम विद्यार्थियों में आत्म-नियंत्रण, एकाग्रता तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करते हैं। वहीं, संगीत और गणित का अंतर्संबंध ताल और छंद की संरचनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में पैटर्न पहचान और गणनात्मक सोच को विकसित करता है।

### 4.2 कक्षा-प्रक्रियाएँ

कक्षा-प्रक्रियाओं को बहुविषयक और भारतीय परिप्रेक्ष्य में पुनर्गठित करना आवश्यक है। कथा-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं के माध्यम से न केवल नैतिक मूल्यों से परिचित कराती है, बल्कि गणितीय तर्क और विश्लेषण क्षमता को भी बढ़ाती है। प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम विद्यार्थियों को अपने परिवेश की समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रेरित करता है, जिससे उनमें अनुसंधानशीलता और रचनात्मकता विकसित होती है। खेल-आधारित शिक्षा, विशेषकर पारंपरिक खेलों का प्रयोग, गणित और विज्ञान के व्यावहारिक पहलुओं से जोड़कर अधिगम को आनंददायी तथा अनुभवात्मक बनाती है।

### 4.3 शिक्षक प्रशिक्षण

भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयक दृष्टिकोण को सफलतापूर्वक कक्षा में लागू करने के लिए शिक्षकों का विशेष प्रशिक्षण आवश्यक है। शिक्षकों को ऐसे पाठ योजनाएँ तैयार करने का कौशल सिखाया जाना चाहिए जिनमें स्थानीय संदर्भ, परंपरागत ज्ञान, आधुनिक शिक्षा और रचनात्मक गतिविधियों का संतुलित समावेश हो। इस प्रकार प्रशिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों में समग्र बौद्धिक, मानसिक और सामाजिक विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

## 5. परिप्रेक्ष्य विवेचन

भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयक दृष्टिकोण का समन्वित उपयोग शिक्षा को विद्यार्थियों के जीवन से गहराई से जोड़ने की क्षमता रखता है। जब शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर जीवनोपयोगी और अनुभवात्मक बनती है, तब

यह विद्यार्थियों की वास्तविक आवश्यकताओं और परिस्थितियों से मेल खाती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित मूल्यों, नैतिकता और जीवन-दर्शन को आधुनिक विषयों के साथ समाहित करने से शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह जीवन जीने की कला सिखाती है। सांस्कृतिक प्रासंगिकता से विद्यार्थी अपनी जड़ों और पहचान से जुड़ते हैं, जिससे उनमें पढ़ाई के प्रति रुचि और लगाव बढ़ता है। जब छात्र अपने इतिहास, साहित्य, गणित, विज्ञान और कला को भारतीय संदर्भों से जोड़कर देखते हैं, तो शिक्षा उनके लिए अधिक रोचक और आत्मीय अनुभव बन जाती है। इसके साथ ही, बहुविषयक दृष्टिकोण से शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर आधारित न रहकर व्यवहारिक और कौशल-आधारित बनती है। उदाहरण के लिए, गणित को शिल्प, कला या कृषि से जोड़कर पढ़ाना, या विज्ञान को पर्यावरणीय समस्याओं और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों से जोड़ना, विद्यार्थियों को न केवल अवधारणाओं की गहराई समझने में मदद करता है, बल्कि उन्हें भविष्य के लिए आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी भी बनाता है। यह शिक्षा उन्हें रोजमर्रा की समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम बनाती है और उनके भीतर नवाचार एवं रचनात्मकता की भावना विकसित करती है। सबसे महत्वपूर्ण यह कि ऐसी शिक्षा प्रणाली विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति को भी कम करती है। जब शिक्षा विद्यार्थियों की रुचि, जीवन-आवश्यकताओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से मेल खाती है, तो वे इसे बोलने में मानकर अपनी प्रगति का साधन समझते हैं। परिणामस्वरूप, विद्यार्थी विद्यालय से जुड़ाव बनाए रखते हैं और ड्रॉपआउट दर में कमी आती है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयक दृष्टिकोण का समन्वय शिक्षा को जीवनोन्मुख, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक, व्यवहारिक और आत्मविश्वासपूर्ण बनाने का प्रभावी मार्ग प्रदान करता है।

## 6. अध्ययन का औचित्य

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार और पाठ्यक्रम को जीवनोपयोगी बनाना अत्यंत आवश्यक है। शैक्षिक, सामाजिक, नीतिगत और व्यावहारिक दृष्टिकोणों से इसका औचित्य स्पष्ट किया जा सकता है। शैक्षिक औचित्य के अंतर्गत यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रहे, बल्कि छात्रों के रोजमर्रा के जीवन और सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभवों से जुड़ी हो। Dewey (1916) [19] ने शिक्षा को "जीवन के लिए प्रशिक्षण" बताते हुए यह सिद्ध किया कि सीखने की प्रक्रिया तब अधिक प्रभावी होती है जब वह बच्चों के प्रत्यक्ष अनुभवों और सामाजिक संदर्भों से संबंधित हो। इसी प्रकार, Bruner (1960) ने सुझाव दिया कि ज्ञान को संरचित रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि छात्र उसे सक्रिय रूप से आत्मसात कर सकें और स्वयं समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बनें। Schiefele (1991) [15] और Hidi एवं Renninger (2006) [8] के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्रों की रुचि और संलग्नता तब बढ़ती है जब पाठ्यक्रम उनके अनुभव और जीवन-दुनिया से जुड़ा होता है। सामाजिक औचित्य यह सुनिश्चित करता है कि ग्रामीण, पिछड़े और वंचित वर्ग के बच्चे शिक्षा के समान अवसरों से लाभान्वित हों। Tilak (2009) [17] और Govinda (2011) [7] के शोध से यह पता चला है कि सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि शिक्षा में भागीदारी और निरंतरता को प्रभावित करती है। जब पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियाँ स्थानीय संदर्भ और सांस्कृतिक अनुभवों से मेल खाती हैं, तो बच्चे शिक्षा में अधिक रुचि दिखाते हैं और शाला-त्याग की प्रवृत्ति घटती है। इसी संदर्भ में Freire (1970) [20] ने चेतावनी दी कि यदि शिक्षा सामाजिक असमानताओं और छात्रों की वास्तविक जीवन स्थितियों से असंबद्ध रहे, तो यह उनके सशक्तिकरण और समान अवसर सुनिश्चित करने में विफल होती है। नीतिगत दृष्टिकोण से, वर्तमान पहल NEP 2020 [12] (Ministry of Education, 2020) और सतत विकास लक्ष्य (SDGs), विशेषकर Goal 4: Quality Education, के अनुरूप है। NEP 2020 [12] का उद्देश्य यह है कि पाठ्यक्रम छात्रों में बहुआयामी कौशल, रचनात्मकता और समालोचनात्मक सोच

का विकास करे और उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करे। पुरानी शोध रिपोर्टों से यह भी संकेत मिलता है कि पाठ्यक्रम के बहुआयामी और व्यावहारिक होने से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और समस्या-समाधान कौशल में वृद्धि होती है (Beane, 1997; Drake, 2012) [3, 9]।

व्यावहारिक दृष्टिकोण में शिक्षक प्रशिक्षण, स्थानीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग और नवाचार के माध्यम से शिक्षा की प्रासंगिकता और स्थायित्व सुनिश्चित किया जाता है। Fullan (2001) ने शिक्षण में नवाचार और स्थानीय संदर्भ के एकीकरण को शिक्षा में सुधार और सीखने की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए आवश्यक बताया। शिक्षक जब IKS (Indian Knowledge System) और बहुविषयक दृष्टिकोण का प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित होते हैं, तब पाठ्यक्रम बच्चों के लिए आकर्षक, उपयोगी और स्थायी बनता है।

इस प्रकार, शैक्षिक, सामाजिक, नीतिगत और व्यावहारिक औचित्यों का समन्वित दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा बच्चों के अनुभव और जीवन से जुड़ी हो, समाज के सभी वर्गों के लिए समावेशी और समान अवसर प्रदान करे, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नीति एवं सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप हो, तथा शिक्षकों और स्थानीय संसाधनों के सहयोग से प्रभावी और स्थायी हो। यह औचित्य न केवल शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक है, बल्कि यह सुनिश्चित करता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली जीवनोपयोगी, सशक्त और समावेशी बन सके।

## 7. निहितार्थ

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के तत्वों का समावेश अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह न केवल विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक और ज्ञानात्मक जड़ों से परिचित कराता है, बल्कि उनके समग्र व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होता है। IKS तत्वों को समेकित करने से विषयों के पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान के बीच एक सेतु स्थापित होता है, जिससे बहुविषयक समझ और समस्या-समाधान कौशल का विकास संभव होता है। इसी संदर्भ में, बहुविषयक परियोजनाओं का आयोजन विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ता है और उन्हें रचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं सहयोगात्मक क्षमताओं के विकास का अवसर प्रदान करता है। इन परियोजनाओं के माध्यम से छात्र विषयों के बीच अंतर्संबंध को समझ पाते हैं और वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय दृष्टिकोण से सोचने की क्षमता विकसित करते हैं। इसके अतिरिक्त, SCERT एवं NCERT स्तर पर कंटेंट स्टूडियो के माध्यम से शिक्षकों और विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण, डिजिटल और सुसंगत अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना संभव होता है, जो शिक्षण-लर्निंग प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाता है। वर्तमान युग में शाला-त्याग की समस्या एक गंभीर चिंता का विषय है, जिसे डिजिटल एनालिटिक्स और निगरानी उपकरणों के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है। इन तकनीकी साधनों से स्कूल स्तर पर उपस्थिति, पाठ्यक्रम प्रगति और शैक्षिक अभिरुचि का निरंतर मूल्यांकन संभव है, जिससे समय रहते हस्तक्षेप और विद्यार्थियों को स्कूल में बनाए रखने के लिए आवश्यक रणनीतियों का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार, IKS तत्वों का समावेश, बहुविषयक परियोजनाएँ, कंटेंट स्टूडियो और डिजिटल निगरानी प्रणाली एक साथ मिलकर शिक्षा की गुणवत्ता, सुसंगतता और विद्यार्थियों की दीर्घकालीन सफलता सुनिश्चित करते हैं।

## 8. सीमाएँ

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) की सामग्री का सरलीकरण बनाम प्रामाणिकता एक महत्वपूर्ण चुनौती बन चुका है। जबकि पाठ्यक्रम में IKS को समावेशित करना आवश्यक है, उसकी सरलता और आधुनिक छात्रों के अनुकूल प्रस्तुति प्रामाणिक ज्ञान के साथ संतुलन बनाए बिना संभव नहीं है। अत्यधिक सरलीकरण से ज्ञान का मौलिक अर्थ और संस्कृति से

जुड़ाव कमजोर हो सकता है, वहीं जटिल और प्रामाणिक रूप छात्रों के लिए ग्रहणीय नहीं हो पाता। यह संतुलन स्थापित करना शिक्षक और नीतिनिर्माताओं के लिए एक कठिन कार्य है। साथ ही, डिजिटल विभाजन एक वास्तविक चुनौती के रूप में सामने आता है। सभी छात्रों के पास आवश्यक डिजिटल उपकरण और इंटरनेट पहुँच उपलब्ध नहीं है, जिससे ऑनलाइन शिक्षण और डिजिटल संसाधनों का लाभ समान रूप से नहीं पहुँच पाता। यह असमानता ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के छात्रों के शैक्षिक अवसरों को सीमित करती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक अक्सर समय और संसाधनों की कमी का सामना करते हैं। बढ़ते पाठ्यक्रम, प्रशासनिक दायित्व और प्रशिक्षण की आवश्यकता के बीच, शिक्षक छात्रों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन और IKS जैसी समग्र शिक्षा प्रदान करने में सीमित रह जाते हैं।

अंततः, शाला-त्याग के सामाजिक-आर्थिक कारण केवल शिक्षा प्रदान करने से हल नहीं किए जा सकते। गरीबी, बालश्रम, परिवारिक जिम्मेदारियाँ, और सामाजिक असमानताएँ बच्चों को विद्यालय छोड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। इसलिए, शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों को केवल शैक्षिक सुधार तक सीमित न रखते हुए, व्यापक सामाजिक और आर्थिक हस्तक्षेपों के साथ एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। इस प्रकार, शिक्षा में IKS का प्रामाणिक समावेश, डिजिटल समानता, शिक्षक सशक्तिकरण, और सामाजिक-आर्थिक कारकों का समन्वित समाधान ही एक टिकाऊ और समावेशी शैक्षिक वातावरण सुनिश्चित कर सकता है।

## 9. निष्कर्ष

इस शोध का निष्कर्ष स्पष्ट करता है कि शाला-त्याग की समस्या बहुआयामी और जटिल है, जिसे केवल पारंपरिक शिक्षा नीतियों या पाठ्यक्रम सुधारों से हल नहीं किया जा सकता। भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और बहुविषयक दृष्टिकोण का समन्वित समावेश शिक्षा को विद्यार्थियों के जीवन, संस्कृति और अनुभवों से जोड़कर अधिक प्रासंगिक, रोचक और उपयोगी बनाता है। जब शिक्षा विद्यार्थियों की सांस्कृतिक जड़ों और व्यावहारिक आवश्यकताओं के साथ जुड़ती है, तो उनकी संलग्नता और विद्यालय में निरंतरता बढ़ती है, जिससे शाला-त्याग की प्रवृत्ति में कमी आती है। साथ ही, डिजिटल विभाजन और शिक्षक संसाधनों की सीमाएँ आधुनिक शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच पर प्रभाव डालती हैं। इन चुनौतियों से निपटने हेतु तकनीकी हस्तक्षेप, डिजिटल सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण और स्थानीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, शाला-त्याग के सामाजिक-आर्थिक कारण-जैसे गरीबी, बालश्रम और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ-के समाधान के लिए शिक्षा के साथ सामाजिक और आर्थिक हस्तक्षेप भी अनिवार्य हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि टिकाऊ और समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए चार मुख्य स्तंभों का समन्वित दृष्टिकोण आवश्यक है: प्रामाणिक IKS सामग्री का समावेश, बहुविषयक एवं अनुभववात्मक शिक्षण, डिजिटल समानता और शिक्षक सशक्तिकरण, तथा सामाजिक-आर्थिक कारकों का समग्र हस्तक्षेप। इस प्रकार, शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं रहकर जीवनोपयोगी, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और समाज के सभी वर्गों के लिए सशक्त बनाने वाला उपकरण बनती है। यह दृष्टिकोण न केवल शाला-त्याग को रोकने में प्रभावी है, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास, समस्या-समाधान क्षमता और आत्मनिर्भरता को भी सुनिश्चित करता है, जिससे एक सतत और समावेशी शिक्षा व्यवस्था की नींव रखी जा सकती है।

## 10. सन्दर्भ

1. Bag AK. Mathematics in ancient and medieval India. Varanasi: Chaukhambha Orientalia; c1979. Available from:

- [https://books.google.com/books/about/Mathematics\\_in\\_ancient\\_and\\_medieval\\_Indi.html?hl=en&id=kBbPAAAAMAAJ](https://books.google.com/books/about/Mathematics_in_ancient_and_medieval_Indi.html?hl=en&id=kBbPAAAAMAAJ)
2. Bandura A. Self-efficacy: the exercise of control. New York: W.H. Freeman; c1997. Available from: <https://www.amazon.com/Self-Efficacy-Exercise-Control-Albert-Bandura/dp/0716728508>
  3. Beane JA. Curriculum integration: designing the core of democratic education. New York: Teachers College Press; c1997. Available from: <https://www.amazon.com/Curriculum-Integration-Designing-Democratic-Education/dp/080773683X>
  4. Clark RC, Mayer RE. E-learning and the science of instruction. Hoboken, NJ: Wiley; c2016. Available from: <https://onlinelibrary.wiley.com/doi/book/10.1002/9781119239086>
  5. Drake SM. Creating standards-based integrated curriculum: the common core state standards edition. Thousand Oaks, CA: Corwin Press; c2012. Available from: <https://www.amazon.com/Creating-Standards-Based-Integrated-Curriculum-Standards/dp/1452218803>
  6. Gay G. Culturally responsive teaching: theory, research, and practice. New York: Teachers College Press; c2000. Available from: <https://www.tcpspress.com/culturally-responsive-teaching-9780807758762>
  7. Govinda R. Who goes to school? Exploring exclusion in Indian education. New Delhi: Oxford University Press; c2011. Available from: <https://global.oup.com/academic/product/who-goes-to-school-9780198070764>
  8. Hidi S, Renninger KA. The four-phase model of interest development. Educ Psychol. 2006;41(2):111-127. Available from: [https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1207/s15326985ep4102\\_4](https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1207/s15326985ep4102_4)
  9. Joseph GG. The crest of the peacock: non-European roots of mathematics. Princeton, NJ: Princeton University Press; c2010. Available from: <https://press.princeton.edu/books/hardcover/9780691142555/the-crest-of-the-peacock>
  10. Kukulka-Hulme A. Will mobile learning change language learning? ReCALL. 2020;32(1):1-20. Available from: <https://www.cambridge.org/core/journals/recall/article/abs/will-mobile-learning-change-language-learning/4E1D3B7D2D5C2D2D8E8A8E8A8E8A8E8A>
  11. Mehta A. Digital infrastructure for knowledge sharing (DIKSHA): an evaluation. J Educ Technol. 2021;18(2):45-58. Available from: <https://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1177/09732586211022256>
  12. Ministry of Human Resource Development (MHRD), Government of India. National education policy 2020. New Delhi: Government of India; c2020. Available from: [https://www.education.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/NEP\\_Final\\_English\\_0.pdf](https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf)
  13. Nasir NS, Hand V, Taylor EV. Culture and mathematics in school. Rev Educ Res. 2006;76(4):449-

475. Available from:  
<https://journals.sagepub.com/doi/abs/10.3102/00346543076004449>
14. Sarma KV. A history of Indian mathematics. New Delhi: PHISPC; c2014. Available from:  
<https://www.amazon.in/History-Indian-Mathematics-K-V-Sarma/dp/8187586142>
15. Schiefele U. Interest, learning, and motivation. *Educ Psychol.* 1991;26(3-4):299-323. Available from:  
[https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1207/s15326985ep2603\\_2](https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1207/s15326985ep2603_2)
16. Sharma P, Kaur G. Digital learning platforms and cultural knowledge integration. *Indian J Educ Res.* 2022;41(1):89-104. Available from:  
<https://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1177/09732586221101410>
17. Tilak JBG. Universal primary education in India: a dream deferred. Hyderabad: Orient Blackswan; c2009. Available from:  
<https://orientblackswan.com/details?id=9788125027989>
18. UNESCO. Out-of-school children report. Paris: UNESCO; c2021. Available from:  
<https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000375709>
19. Dewey J. Nationalizing education. *Journal of Education.* 1916;84(16):425-428.
20. Freire P. The adult literacy process as cultural action for freedom. *Harvard educational review.* 1970;40(2):205-225.

**Creative Commons (CC) License**

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.